فَسَوّٰى ﴿۳۸﴾ فَجَعَلَ مِنْهُ الزَّوْجَيْنِ الذَّكَرَ وَالْاُنْثٰى ﴿۳۹﴾ اَلَيْسَ ذٰلِكَ

फिर ठीक बनाया[38] तो उस से[39] दो जोड़े बनाए[40] मर्द और औ़रत क्या जिस ने येह

بِقٰدِرٍ عَلٰۤى اَنْ يُّحْیِۦَ الْمَوْتٰى ﴿۴۰﴾ ع ٢ ١٨

कुछ किया वोह मुर्दे न जिला सकेगा

اٰیاتھا ۳۱ ۷۶ سُوْرَةُ الدَّهْرِ مَدَنِيَّةٌ ۹۸ رکوعاتھا ۲

सूरए दहर मदनिय्या है, इस में इक्तीस आयतें और दो रुकूअ़ हैं

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

अल्लाह के नाम से शुरूअ़ जो निहायत मेहरबान रह़्म वाला[1]

هَلْ اَتٰى عَلَى الْاِنْسَانِ حِيْنٌ مِّنَ الدَّهْرِ لَمْ يَكُنْ شَيْـًٔا مَّذْكُوْرًا ﴿۱﴾ اِنَّا

बेशक आदमी पर[2] एक वक़्त वोह गुज़रा कि कहीं उस का नाम भी न था[3] बेशक हम ने

خَلَقْنَا الْاِنْسَانَ مِنْ نُّطْفَةٍ اَمْشَاجٍ ۖۗ نَّبْتَلِيْهِ فَجَعَلْنٰهُ سَمِيْعًۢا بَصِيْرًا ﴿۲﴾

आदमी को पैदा किया मिली हुई मनी से[4] कि उसे जांचें[5] तो उसे सुनता देखता कर दिया[6]

اِنَّا هَدَيْنٰهُ السَّبِيْلَ اِمَّا شَاكِرًا وَّ اِمَّا كَفُوْرًا ﴿۳﴾ اِنَّاۤ اَعْتَدْنَا

बेशक हम ने उसे राह बताई[7] या ह़क़ मानता[8] या नाशुक्री करता[9] बेशक हम ने काफ़िरों

لِلْكٰفِرِيْنَ سَلٰسِلَاۡ وَ اَغْلٰلًا وَّ سَعِيْرًا ﴿۴﴾ اِنَّ الْاَبْرَارَ يَشْرَبُوْنَ مِنْ

के लिये तय्यार कर रखी हैं ज़न्जीरें[10] और त़ौक़[11] और भड़कती आग[12] बेशक नेक पियेंगे उस जाम में से

كَاْسٍ كَانَ مِزَاجُهَا كَافُوْرًا ﴿۵﴾ عَيْنًا يَّشْرَبُ بِهَا عِبَادُ اللّٰهِ يُفَجِّرُوْنَهَا

जिस की मिलौनी (आमेज़िश) काफ़ूर है वोह काफ़ूर क्या? एक चश्मा है[13] जिस में से **अल्लाह** के निहायत ख़ास बन्दे पियेंगे अपने मह़ल्लों में उसे जहां चाहें

38 : उस के आ'ज़ा को कामिल किया उस में रूह़ डाली **39 :** या'नी मनी से या इन्सान से **40 :** दो सिफ़तें पैदा कीं **1 :** सूरए दहर इस का नाम सूरए इन्सान भी है। मुजाहिद व क़तादा और जुम्हूर के नज़्दीक येह सूरत मदनिय्या है, बा'ज़ ने इस को मक्किय्या कहा है। इस में दो 2 रुकूअ़, इक्तीस 31 आयतें, दो सो चालीस 240 कलिमे और एक हज़ार चव्वन 1054 ह़र्फ़ हैं। **2 :** या'नी ह़ज़रते आदम عَلَيْهِ السَّلَام पर नफ़्ख़े रूह़ से पहले चालीस साल का **3 :** क्यूं कि वोह एक मिट्टी का ख़मीर था, न कहीं उस का ज़िक्र था, न उस को कोई जानता था, न किसी को उस की पैदाइश की ह़िक्मतें मा'लूम थीं, इस आयत की तफ़्सीर में येह भी कहा गया है इन्सान से जिन्स मुराद है और वक़्त से उस के ह़म्ल में रहने का ज़माना। **4 :** मर्द व औ़रत की **5 :** मुकल्लफ़ कर के अपने अम्र व नही से। **6 :** ताकि दलाइल का मुशाहदा और आयात का इस्तिमाअ़ कर सके। **7 :** दलाइल क़ाइम कर के, रसूल भेज कर, किताबें नाज़िल फ़रमा कर, ताकि हो **8 :** या'नी मोमिन सईद **9 :** काफ़िर शक़ी। **10 :** जिन्हें बांध कर दोज़ख़ की त़रफ़ घसीटे जाएंगे **11 :** जो गलों में डाले जाएंगे **12 :** जिस में जलाए जाएंगे। **13 :** जन्नत में।

www.dawateislami.net

تَفْجِيْرًا ﴿٦﴾ يُوْفُوْنَ بِالنَّذْرِ وَيَخَافُوْنَ يَوْمًا كَانَ شَرُّهٗ مُسْتَطِيْرًا ﴿٧﴾

बहा कर ले जाएंगे[14] अपनी मन्नतें पूरी करते हैं[15] और उस दिन से डरते हैं जिस की बुराई[16] फैली हुई है[17]

وَيُطْعِمُوْنَ الطَّعَامَ عَلٰى حُبِّهٖ مِسْكِيْنًا وَّيَتِيْمًا وَّاَسِيْرًا ﴿٨﴾ اِنَّمَا نُطْعِمُكُمْ

और खाना खिलाते हैं उस की महब्बत पर[18] मिस्कीन और यतीम और असीर (क़ैदी) को उन से कहते हैं हम तुम्हें ख़ास

لِوَجْهِ اللّٰهِ لَا نُرِيْدُ مِنْكُمْ جَزَآءً وَّلَا شُكُوْرًا ﴿٩﴾ اِنَّا نَخَافُ مِنْ رَّبِّنَا

अल्लाह के लिये खाना देते हैं तुम से कोई बदला या शुक्र गुज़ारी नहीं मांगते बेशक हमें अपने रब से एक ऐसे दिन

يَوْمًا عَبُوْسًا قَمْطَرِيْرًا ﴿١٠﴾ فَوَقٰىهُمُ اللّٰهُ شَرَّ ذٰلِكَ الْيَوْمِ وَلَقّٰىهُمْ نَضْرَةً

का डर है जो बहुत तुर्श निहायत सख़्त है[19] तो उन्हें **अल्लाह** ने उस दिन के शर से बचा लिया और उन्हें ताज़गी

وَّسُرُوْرًا ﴿١١﴾ وَجَزٰىهُمْ بِمَا صَبَرُوْا جَنَّةً وَّحَرِيْرًا ﴿١٢﴾ مُّتَّكِـِٕيْنَ فِيْهَا

और शादमानी दी और उन के सब्र पर उन्हें जन्नत और रेशमी कपड़े सिले में दिये जन्नत में तख़्तों पर

عَلَى الْاَرَآئِكِ ۚ لَا يَرَوْنَ فِيْهَا شَمْسًا وَّلَا زَمْهَرِيْرًا ﴿١٣﴾ وَدَانِيَةً

तक्या लगाए होंगे न उस में धूप देखेंगे न ठिठर[20] और उस के[21]

عَلَيْهِمْ ظِلٰلُهَا وَذُلِّلَتْ قُطُوْفُهَا تَذْلِيْلًا ﴿١٤﴾ وَيُطَافُ عَلَيْهِمْ بِاٰنِيَةٍ

साए उन पर झुके होंगे और उस के गुच्छे झुका कर नीचे कर दिये गए होंगे[22] और उन पर चांदी के बरतनों

14 : अबरार के सवाब बयान फ़रमाने के बा'द उन के आ'माल का ज़िक्र फ़रमाया जाता है जो इस सवाब का सबब हुए। **15 : मन्नत** येह है कि जो चीज़ आदमी पर वाजिब नहीं है वोह किसी शर्त से अपने ऊपर वाजिब करे, मसलन येह कहे कि अगर मेरा मरीज़ अच्छा हो या मेरा मुसाफ़िर बख़ैर वापस आए तो मैं राहे ख़ुदा में इस क़दर सदक़ा दूंगा या इतनी रक्अतें नमाज़ पढ़ूंगा, इस नज़्र की वफ़ा वाजिब होती है, मा'ना येह हैं कि वोह लोग ताआत व इबादात और शरअ के वाजिबात के आमिल हैं हत्ता कि जो ताआते ग़ैर वाजिबा अपने ऊपर नज़्र से वाजिब कर लेते हैं उस को भी अदा करते हैं। **16 :** या'नी शिद्दत और सख़्ती **17 :** क़तादा ने कहा कि उस दिन की शिद्दत इस क़दर फैली हुई है कि आस्मान फट जाएंगे, सितारे गिर पड़ेंगे, चांद सूरज बे नूर हो जाएंगे, पहाड़ रेज़ा रेज़ा हो जाएंगे, कोई इमारत बाक़ी न रहेगी। इस के बा'द येह बताया जाता है कि उन के आ'माल रिया व नुमाइश से ख़ाली हैं। **18 :** या'नी ऐसी हालत में जब कि ख़ुद उन्हें खाने की हाजत व ख़्वाहिश हो और बा'ज़ मुफ़स्सिरीन ने इस के येह मा'ना लिये हैं कि **अल्लाह** तआला की महब्बत में खिलाते हैं। **शाने नुज़ूल :** येह आयत हज़रत अलिय्ये मुर्तज़ा رضی اللہ تعالٰی عنہ और हज़रते फ़ातिमा رضی اللہ تعالٰی عنہا और इन की कनीज़ फ़िज़्ज़ा के हक़ में नाज़िल हुई, हसनैने करीमैन رضی اللہ تعالٰی عنہما बीमार हुए, इन हज़रात ने उन की सिहहत पर तीन रोज़ों की नज़्र मानी **अल्लाह** तआला ने सिहहत दी, नज़्र की वफ़ा का वक़्त आया सब साहिबों ने रोज़े रखे, हज़रत अलिय्ये मुर्तज़ा رضی اللہ تعالٰی عنہ एक यहूदी से तीन साअ (साअ एक पैमाना है) जव लाए, हज़रत ख़ातूने जन्नत ने एक एक साअ तीनों दिन पकाया, लेकिन जब इफ़्तार का वक़्त आया और रोटियां सामने रखीं तो एक रोज़ मिस्कीन एक रोज़ यतीम एक रोज़ असीर आया और तीनों रोज़ येह सब रोटियां उन लोगों को दे दी गईं और सिर्फ़ पानी से इफ़्तार कर के अगला रोज़ा रख लिया गया। **19 :** लिहाज़ा हम अपने अमल की जज़ा या शुक्र गुज़ारी तुम से नहीं चाहते, येह अमल इस लिये है कि हम उस दिन ख़ौफ़ से अम्न में रहें **20 :** या'नी गरमी या सरदी की कोई तक्लीफ़ वहां न होगी **21 :** या'नी बिहिश्ती दरख़्तों के **22 :** कि खड़े बैठे लैटे हर हाल में ख़ोशे ब आसानी ले सकें।

www.dawateislami.net

مِّنْ فِضَّةٍ وَّ اَكْوَابٍ كَانَتْ قَوَارِيْرَا۟ ۙ(۱۵) قَوَارِيْرَا۟ مِنْ فِضَّةٍ قَدَّرُوْهَا

और कूज़ों का दौर होगा जो शीशे के मिस्ल हो रहे होंगे कैसे शीशे चांदी के[23] साक़ियों ने उन्हें पूरे

تَقْدِيْرًا (۱۶) وَ يُسْقَوْنَ فِيْهَا كَاْسًا كَانَ مِزَاجُهَا زَنْجَبِيْلًا ۚ(۱۷) عَيْنًا

अन्दाज़े पर रखा होगा[24] और उस में वोह जाम पिलाए जाएंगे[25] जिस की मिलौनी अदरक होगी[26] वोह अदरक क्या है

فِيْهَا تُسَمّٰى سَلْسَبِيْلًا (۱۸) وَ يَطُوْفُ عَلَيْهِمْ وِلْدَانٌ مُّخَلَّدُوْنَ ۚ اِذَا

जन्नत में एक चश्मा है जिसे सल्सबील कहते हैं[27] और उन के आस पास ख़िदमत में फिरेंगे हमेशा रहने वाले लड़के[28] जब

رَاَيْتَهُمْ حَسِبْتَهُمْ لُؤْلُؤًا مَّنْثُوْرًا (۱۹) وَ اِذَا رَاَيْتَ ثَمَّ رَاَيْتَ نَعِيْمًا وَّ

तू उन्हें देखे तो उन्हें समझे कि मोती हैं बिखरे हुए[29] और जब तू इधर नज़र उठाए एक चैन देखे[30] और

مُلْكًا كَبِيْرًا (۲۰) عٰلِيَهُمْ ثِيَابُ سُنْدُسٍ خُضْرٌ وَّ اِسْتَبْرَقٌ٘ ؗ وَّ حُلُّوْۤا

बड़ी सल्तनत[31] उन के बदन पर हैं करेब के सब्ज़ कपड़े[32] और क़नादीज़ के[33] और उन्हें

اَسَاوِرَ مِنْ فِضَّةٍ ۚ وَ سَقٰىهُمْ رَبُّهُمْ شَرَابًا طَهُوْرًا (۲۱) اِنَّ هٰذَا كَانَ

चांदी के कंगन पहनाए गए[34] और उन्हें उन के रब ने सुथरी शराब पिलाई[35] उन से फ़रमाया जाएगा

لَكُمْ جَزَآءً وَّ كَانَ سَعْيُكُمْ مَّشْكُوْرًا ۠ (۲۲) اِنَّا نَحْنُ نَزَّلْنَا عَلَيْكَ ع ۲/۲۲ ۱۹

येह तुम्हारा सिला है[36] और तुम्हारी मेहनत ठिकाने लगी[37] बेशक हम ने तुम पर[38]

قرء حفص بغير الالف في الوصل فيهما و وقف على الاول بالالف و على الثاني بغير الالف.

23 : जन्नती बरतन चांदी के होंगे और चांदी के रंग और उस के हुस्न के साथ मिस्ल आबगीना के साफ़ शफ़्फ़ाफ़ होंगे कि उन में जो चीज़ पी जाएगी वोह बाहर से नज़र आएगी। **24 :** या'नी पीने वालों की रग़बत की क़दर न उस से कम न ज़ियादा, येह सलीक़ा जन्नती ख़ुद्दाम के साथ ख़ास है, दुन्या के साक़ियों को मुयस्सर नहीं। **25 :** शराबे तहूर के **26 :** उस की आमेज़िश से शराब की लज़्ज़त और ज़ियादा हो जाएगी। **27 :** मुक़र्रबीन तो ख़ालिस उसी को पियेंगे और बाक़ी अहले जन्नत की शराबों में उस की आमेज़िश होगी, येह चश्मा ज़ेरे अर्श से जन्नते अदन होता हुवा तमाम जन्नतों में गुज़रता है। **28 :** जो न कभी मरेंगे न बूढ़े होंगे न उन में कोई तग़य्युर आएगा न ख़िदमत से उक्ताएंगे, उन के हुस्न का येह आलम होगा **29 :** या'नी जिस तरह फ़र्शे मुसफ़्फ़ा पर गौहरे आबदार ग़लतान हो इस हुस्नो सफ़ा के साथ जन्नती गिल्मान मश्ग़ूले ख़िदमत होंगे। **30 :** जिस का वस्फ़ बयान में नहीं आ सकता **31 :** जिस की हद व निहायत नहीं, न उस को ज़वाल न जन्नती को वहां से इन्तिक़ाल, वुस्अत का येह आलम कि अदना मर्तबे का जन्नती जब अपने मुल्क में नज़र करेगा तो हज़ार बरस की राह तक ऐसे ही देखेगा जैसे अपने क़रीब की जगह देखता हो, शौकतो शिकोह येह होगा कि मलाएका बे इजाज़त न आएंगे। **32 :** या'नी बारीक रेशम के **33 :** या'नी दबीज़ रेशम के **34 :** हज़रते इब्ने मुसय्यिब رضی اللہ تعالٰی عنہ ने फ़रमाया कि हर एक जन्नती के हाथ में तीन कंगन होंगे, एक चांदी का एक सोने का एक मोती का। **35 :** जो निहायत पाक साफ़, न उसे किसी का हाथ लगा न किसी ने छुवा न वोह पीने के बा'द शराबे दुन्या की तरह जिस्म के अन्दर सड़ कर बौल (पेशाब) बने, बल्कि उस की सफ़ाई का येह आलम है कि जिस्म के अन्दर उतर कर पाकीज़ा ख़ुश्बू बन कर जिस्म से निकलती है, अहले जन्नत को खाने के बा'द शराब पेश की जाएगी, उस को पीने से उन के पेट साफ़ हो जाएंगे और जो उन्हों ने खाया है वोह पाकीज़ा ख़ुश्बू बन कर उन के जिस्मों से निकलेगा और उन की ख़्वाहिशें और रग़बतें फिर ताज़ा हो जाएंगी। **36 :** या'नी तुम्हारी इताअ़तो फ़रमां बरदारी का। **37 :** कि तुम से तुम्हारा रब राज़ी हुवा और उस ने तुम्हें सवाबे अज़ीम अता फ़रमाया। **38 :** ऐ सय्यिदे आलम صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم।

www.dawateislami.net

الْقُرْاٰنَ تَنْزِيْلًا ۚ﴿۲۳﴾ فَاصْبِرْ لِحُكْمِ رَبِّكَ وَلَا تُطِعْ مِنْهُمْ اٰثِمًا اَوْ

कुरआन ब तदरीज उतारा[39] तो अपने रब के हुक्म पर साबिर रहो[40] और इन में किसी गुनहगार या नाशुक्रे की

كَفُوْرًا ۚ﴿۲۴﴾ وَاذْكُرِ اسْمَ رَبِّكَ بُكْرَةً وَّاَصِيْلًا ۖ﴿۲۵﴾ وَمِنَ الَّيْلِ فَاسْجُدْ

बात न सुनो[41] और अपने रब का नाम सुब्ह़ व शाम याद करो[42] और कुछ रात में उसे सज्दा करो[43]

لَهٗ وَسَبِّحْهُ لَيْلًا طَوِيْلًا ﴿۲۶﴾ اِنَّ هٰۤؤُلَآءِ يُحِبُّوْنَ الْعَاجِلَةَ وَيَذَرُوْنَ

और बड़ी रात तक उस की पाकी बोलो[44] बेशक येह लोग[45] पाउं तले की अ़ज़ीज़ रखते हैं[46]

وَرَآءَهُمْ يَوْمًا ثَقِيْلًا ﴿۲۷﴾ نَحْنُ خَلَقْنٰهُمْ وَشَدَدْنَاۤ اَسْرَهُمْ ۚ وَاِذَا

और अपने पीछे एक भारी दिन को छोड़ बैठे हैं[47] हम ने उन्हें पैदा किया और उन के जोड़ बन्द मज़बूत़ किये और हम जब

شِئْنَا بَدَّلْنَاۤ اَمْثَالَهُمْ تَبْدِيْلًا ﴿۲۸﴾ اِنَّ هٰذِهٖ تَذْكِرَةٌ ۚ فَمَنْ شَآءَ

चाहें[48] उन जैसे और बदल दें[49] बेशक येह नसीह़त है[50] तो जो चाहे

اتَّخَذَ اِلٰى رَبِّهٖ سَبِيْلًا ﴿۲۹﴾ وَمَا تَشَآءُوْنَ اِلَّاۤ اَنْ يَّشَآءَ اللّٰهُ ؕ اِنَّ

अपने रब की त़रफ़ राह ले[51] और तुम क्या चाहो मगर येह कि अल्लाह चाहे[52] बेशक

اللّٰهَ كَانَ عَلِيْمًا حَكِيْمًا ۖ﴿۳۰﴾ يُّدْخِلُ مَنْ يَّشَآءُ فِيْ رَحْمَتِهٖ ؕ وَ

वोह इल्मो ह़िक्मत वाला है अपनी रह़मत में लेता है[53] जिसे चाहे[54] और

الظّٰلِمِيْنَ اَعَدَّ لَهُمْ عَذَابًا اَلِيْمًا ۠﴿۳۱﴾

ज़ालिमों के लिये उस ने दर्दनाक अ़ज़ाब तय्यार कर रखा है[55]

39 : आयत आयत कर के और इस में **अल्लाह** तआ़ला की बड़ी ह़िक्मतें हैं। **40 :** रिसालत की तब्लीग़ फ़रमा कर और इस में मशक़्क़तें उठा कर और दुश्मनाने दीन की ईज़ाएं बरदाश्त कर के **41 शाने नुज़ूल :** उ़त्बा बिन रबीआ़ और वलीद इब्ने मुग़ीरा येह दोनों नबिय्ये करीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم के पास आए और कहने लगे : आप इस काम से बाज़ आइये या'नी दीन से, उ़त्बा ने कहा कि आप ऐसा करें तो मैं अपनी बेटी आप को बियाह दूं और बिग़ैर महर के आप की ख़िदमत में ह़ाज़िर कर दूं, वलीद ने कहा कि मैं आप को इतना माल दे दूं कि आप राज़ी हो जाएं, इस पर येह आयत नाज़िल हुई। **42 :** नमाज़ में, सुब्ह़ के ज़िक्र से नमाज़े फ़ज्र और शाम के ज़िक्र से ज़ोहर और अ़स्र मुराद हैं। **43 :** या'नी मग़रिब व इशा की नमाज़ें पढ़ो, इस आयत में पांचों नमाज़ों का ज़िक्र फ़रमाया गया। **44 :** या'नी फ़राइज़ के बा'द नवाफ़िल पढ़ते रहो, इस में नमाज़े तहज्जुद आ गई। बा'ज़ मुफ़स्सिरीन ने फ़रमाया है कि मुराद ज़िक्रे लिसानी है, मक़्सूद येह है कि रोज़ो शब के तमाम अवक़ात में दिल और ज़बान से ज़िक्रे इलाही में मश्ग़ूल रहो। **45 :** या'नी कुफ़्फ़ार **46 :** या'नी मह़ब्बते दुन्या में गिरिफ़्तार हैं **47 :** या'नी रोज़े क़ियामत को जिस के शदाइद कुफ़्फ़ार पर बहुत भारी होंगे, न उस पर ईमान लाते हैं न उस दिन के लिये अ़मल करते हैं। **48 :** उन्हें हलाक कर दें और बजाए उन के **49 :** जो इत़ाअ़त शिआ़र हों। **50 :** मख़्लूक़ के लिये **51 :** उस की इत़ाअ़त बजा ला कर और उस के रसूल की इत्तिबाअ़ कर के। **52 :** क्यूं कि जो कुछ होता है उसी की मशिय्यत से होता है **53 :** या'नी जन्नत में दाख़िल फ़रमाता है **54 :** ईमान अ़त़ा फ़रमा कर। **55 :** ज़ालिमों से मुराद काफ़िर हैं।

www.dawateislami.net